



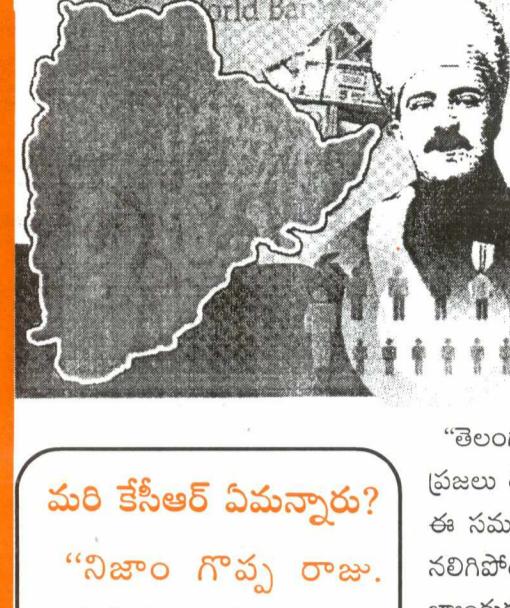
आर्य
ఆర్య జీవన్

జీవన

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकलन

పొంది-తెలుగు ర్హాష్మా ప్రభుత్వం

నిజాం కీంద నలిగిపోయింది



భూస్యామ్య వ్యవస్థతో వెనుకబడ్డ

తెలంగాణ

తీవ్రమైన పేదరికంలో

ఐదు జిల్లాలు

సామాజికంగా ముందున్న సీమ, కోస్తూ

ప్రపంచ బ్యాంకుకు టీ ప్రభుత్వ నివేదిక

మరి కేసీఆర్ ఏమన్నారు?

“నిజాం గౌప్య రాజు. అయిన సమాధికి నివాళులు అర్పించినందుకు విమర్శల దాడికి దిగుతున్నారు. అందులో తప్పేముంది. ఆస్తురులు, రైల్వే స్టేషన్లు కట్టిన ఘనత అయినదే.”

-2015 జనవరి 1న అభిల భారత పోలిస్‌మీట ప్రదర్శన ప్రోరంభోత్సవంలో
సేం కేసీఆర్

“తెలంగాణ తీవ్ర పేదరికాన్ని ఎదుర్కొంటోంది. గ్రామీణ ప్రాంతాల్లో 10 శాతం

ప్రజలు తీవ్రమైన పేదరికంలో ఉన్నారు. తెలంగాణలోని పది జిల్లాల్లో ఐదు జిల్లాలు

ఈ సమస్యలు ఎదుర్కొంటున్నాయి. సుదీర్ఘ నిజాం భూస్యామ్య పాలనలో తెలంగాణ నలిగిపోయాడి.

అభివృద్ధిలో వెనుకబడిపోయింది” అని తెలంగాణ సర్పారు ప్రపంచ బ్యాంకు నివేదించింది. తెలంగాణలో గ్రామాల అభివృద్ధికి ఉద్దేశించిన ప్రాజెక్టు (టీఆర్ఎఫ్ఎస్)కు నిధుల కోరుతూ

ప్రపంచబ్యాంకు సర్పారు నివేదిక జచ్చింది. ఆ నివేదికలో తెలంగాణ వెనుకబడుతనం,

నిజాం పాలనలో జిగిన అన్యాయం, ఉమ్మడి రాష్ట్రంలో తెలంగాణలోని ఐదు జిల్లాల్ని కీలక సమస్యలను ఏకరుపు పెట్టింది.

నిజాం సుదీర్ఘ పాలనలో భూస్యామ్య ప్రభుత్వ పాతకపోయిందని, ఈ కారణంగా అభివృద్ధిలో తెలంగాణ వెనుకబడిపోయిందని, ముఖ్యంగా ఐదు జిల్లాలు అత్యంత పేదరికాన్ని అసుధవిస్తున్నారు. పడికిగాన ఐదు జిల్లాల్లో ఈ సమస్య తీవ్రంగా ఉంది. తెలంగాణ ప్రాంతంలో ఎక్కువగా షట్టుర్లు కులాలు, తగల వారున్నారు. ఇక్కడ స్నేహంత్ర్యం వచ్చేనాటికి... నిజాం భూస్యామ్య పాలనలో అభివృద్ధిలో తెలంగాణ బాగా వెనుకబడి పోయింది. ఇదే సమయంలో తెలంగాణలో పోలిస్ కోస్తూంద్ర, రాయలసీమ ప్రాంతాలు

आर्य समाज को राजनीति में आना चाहिए

- बुशहलचंद्र आप

यह तो सर्वोदय है कि देशको स्वतंत्र करवाने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ रहा है। स्वतंत्रता दिलाने में दो विभागाधारियों के व्यक्तियों ने काम किया है। एक धारा थी क्रांतिकारियों की हिसाकरता। दूसरी धारा थी महात्मा गांधी की अहिंसा का रासा। आर्य समाज ने इन दोनों धाराओं में बहु-चढ़कर भाग लिया था। वैसे तो मर्मिं द्वयानंद द्वारा लिके स्वतंत्र प्रकाश में विवेशी राजा चाहे मातापिता के समान अच्छा व शुभचित ही थे वह्ये न हो, किंतु उन्हें अर्थात् अमृतसाकार और जीवन पाठक, जो अमृतसाकार निवासी व हृष्ट आर्य समाजी थे, ये लाला हरदयालजी की प्रेरणा से क्रांतिकारी बने और फौसी पर चढ़ाये गये। पं. गोदामल लीकित, जो मैट्पुरी पहुँचने में पकड़े गये, वे पक्के आर्य समाजी थे, और जीवन पाठक आर्य समाजी थे, और उन्होंने इसका अहिंसा आदित्य राष्ट्रीय कांग्रेस को आर्य समाज ने पर्याप्त सहयोग प्रदान किया। सन १८८८ में इलाहाबाद अधिकारी ने अंदोलनों में खबर बढ़ावकर भाग लिया था। सन १८८५ में स्थापित व्यवस्था आर्य नेता लाला मुलराज तथा महाशय जयसराम ने की थी। महात्मा गांधी जब दक्षिण भारत के कार्यों को समाज कर भारत में आये, तो भारत में उन्हें आयों द्वारा सक्रिय सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। देश के लालों आर्यसमाजी गांधी द्वारा संवालित सर्वनिय अवज्ञा व असहयोग आदि आंदोलनों में सम्मिलित हुए तथा उन्होंने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा आदि सिद्धांतों को स्वीकार करते हुए, स्वदेशी का वृत्त धारण किया। विवेशी वस्त्रों का वहिककर, जश्न निवारण, दलितों द्वारा नारी शिक्षा, शराब बर्दी, गोरक्षा आदि के रखनामक कार्यों में भी आर्य समाजों किसी से पीछे नहीं रहे। इस प्रकार स्वतंत्रता, भाई परमानन्द एक पक्के आर्य समाज के प्रचारक व डी.ए.वी. कांलेज के प्राच्यापक भी रह चुके थे। वे पक्के क्रांतिकारी भी थे, विवेशी में उन्होंने क्रांति का विनुल भी बजाया था। वार में उसे कलने पानी की सजा भी मिली। भाई हरदयाल एम.एस.वी. एक पक्के आर्य समाजी थे, जिन्होंने इलैंड अमेरिका में जाकर क्रांतिकारी गतिविधियों को क्रियान्वित किया। भाई वालमुकुद, जो भाई

परमानन्द के चर्चेरे भाई, थे, जिन्हें लाई हाईडिंग वाम केस १९१४ में फौसी की सजा हुई। इसके साथ ही भाटट, अमीरखन्द व अवध विहारी को भी फौसी की सजा मिली थी। ये दोनों भी पक्के आर्य समाजी थे। पं. सोहनलाल पाठक, जो अमृतसाकार निवासी व हृष्ट आर्य समाजी थे, ये लाला हरदयालजी की प्रेरणा से क्रांतिकारी बने और फौसी पर चढ़ाये गये। पं. गोदामल लीकित, जो मैट्पुरी पहुँचने में पकड़े गये, वे पक्के आर्य समाजी थे, और जीवन पाठक आर्य समाजी थे, और उसी प्रकार मुकदमा बनाकर अंग्रेजों ने वीर सावरकर को दो उम्र की काल पानी की सजा सुनाई। और उन्हें अंदमान की कालकोटी में सावरकर के ऊपर अमानवीय अल्लाचर ढाये। पर सावरकर कभी भी अत्याचारों से भयभीत होकर विचलित नहीं हुए। दूसरा पक्का, जो गांधीजी का अहिंसा था, उसमें भी लाला लाजपतराय, खामी अद्वानंद जैसे पक्के आर्यसमाजियों ने अंदोलनों में खबर बढ़ावदेशकर भाग लिया था। सन १८८५ में स्थापित व्यवस्था आर्य नेता लाला मुलराज तथा महाशय जयसराम ने की थी। महात्मा गांधी जब दक्षिण भारत के कार्यों को समाज कर भारत में आये, तो भारत में उन्हें आयों द्वारा सक्रिय सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ। देश के लालों आर्यसमाजी गांधी द्वारा संवालित सर्वनिय अवज्ञा व असहयोग आदि आंदोलनों में सम्मिलित हुए तथा उन्होंने महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा आदि सिद्धांतों को स्वीकार करते हुए, स्वदेशी का वृत्त धारण किया। विवेशी वस्त्रों का वहिककर, जश्न निवारण, दलितों द्वारा नारी शिक्षा, शराब बर्दी, गोरक्षा आदि के रखनामक कार्यों में भी आर्य समाजों किसी से पीछे नहीं रहे। इस प्रकार स्वतंत्रता, भाई परमानन्द एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पंजाब में स्वामी दयानंद से सीधी प्रेरणा प्राप्त कर लाला सायदास, लाला लाजपतराय तथा उनके अपूर्व ल्याग ने उन्हें 'लाल, बाल, पाल' की बहुततयी में खन दिलाया। लाला, जो कि लारनीतिक प्रवृत्तियों का सुन्दरत उनकी प्रसिद्ध गवलपिंडी यात्रा से माना जा सकता है, जिसके कारण उन्हें गिरफ्तार कर माडले जेल में बंदी के रूप में रखा गया। इसी समय

सरकार अर्जीत सिंह, जो भगत सिंह के चावा थे, उनको भी मौड़ले के जेल में रखा गया, परंतु इन दोनों को परस्पर मिलने नहीं दिया गया। अर्जीत सिंह जेल से रिहा होकर सरकार की नजरें से बचकर अंग्रेजिस्टरेशन के राते निवेश चले गये। इधर लालाजी साइमन कमीशन निवेश करते हुए लालाजी ने अपनी पीठ पर गोरे पुलिस के डंडों के प्रहार जेल, जो अंततः बिंदुश शासनके लिए ताहत की कील के चुन्ने से बचत हुए। लालाजी ने मरु का बदला लेने के लिए भाग सिंह ने अंग्रेज सार्जें सार्जर्स का बध किया था। लालाजी द्वारा स्थापित लोकसेवक संस्थान के माध्यम से देशभेदों की अपने जीवन का दूर बनाने वालों में भी पुरुषोंतमदास ठंडन, लाला बहादुर शास्त्री व भी अलमुराम शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। गाँधीजी जब अंग्रेजों के बारत में उछाले, तो सबसे पहले वे स्वामी श्रद्धानंद वर्ष १९१९ में अंतवान के अंतवान एवं वहीं पर स्वामीजी ने अपने जीवन का दूर लगाकर संबोधी किया। तभी से सभी लोग गाँधीजी को महात्मा गाँधी कहने लगे। गाँधीजी स्वामी श्रद्धानंद का अपना भई भानुते थे, इसलिए स्वामीजी गाँधीजी के अंतवान एवं जीवनमें उल्लेख अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया, यह कांग्रेस के इतिहास में एक अनोखी घटना थी। रीलट एवं के विरोध में दिल्ली की जनता का नेतृत्व करते हुए इस निर्भिन्न संघर्षी ने अपनी छाती पर संगीनों का बार झेलने का जो सहस्र प्रदर्शित किया, वह हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक ज्वलत उदाहरण है।

पट्टिभिन्नतारामया, जो पक्का काँग्रेसी था और गाँधीजी का सिया था, जिसके लिए सुभाष चावू से हारने के बाद कहा था कि पट्टिभिन्नतारामया की हार मेरी हार है। उसी ने कांग्रेस के लिया लिया है- सन १९४२ के आजादी के अंदोलन में जेलों में ८५ प्रतिशत आर्य समाजी ही थे, जो निल्य हवन करके भी भेजन करते थे। देश की आजादी की लड़ाई में जितने भी आर्य समाजी थे, भजनोपदेशक थे, आर्य समाज के जितने भी मीटर थे, वे क्रान्तिकारियों के आशमस्तु थे, जिनमें बाटकर वे भविष्य की योजनाएँ बनाते थे। आर्य समाज कलकत्ता की भी यह सौभाय प्राप्त हुआ था, जब भगत सिंह संसद में चम फेंकने के बाद दुर्गामाथी के सथ गुप्त रूप से कलकत्ता आये थे, तब कुछ दिनों तक भगत सिंह आर्य समाज कलकत्ता में ठहरकर बगल के क्रान्तिकारियों से मिले थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्य समाज ने क्रान्तिकारियों का तथा गाँधीजी का इतना अधिक साथ दिया था, जिसके कारण सभी अंदोलन सफल हुए। उब की बात यह है कि आर्य समाजियों द्वारा इतना अधिक बलिदान देने के बाद भी जब भारत स्वतंत्र हुआ, तो हमारे शीघ्र नेताओं ने दूरवर्तीत का परिचय न देकर यह कहा कि आर्य समाज तो एक धर्मिक तथा समाजिक संस्था है, उसको राजनीति से बचा लेना देना और शासन करने से अलग हो गयो। यदि आर्य समाज आजादी मिलने के बाद सासन के बाद रहता रहा तो आर्य समाज अपनी फूट के कारण अपना कोई भी अस्तित्व नहीं बना सका। बने और काफी सुधार के काम किये। परंतु सन १९७५ में जब जब प्रकाश नारायण ने कांग्रेस के विरोध में वाकी सब पार्टियों को एक मंच पर 'जनता पार्टी' के नाम से आने का अहवान किया, तब सब पार्टियों के साथ 'आर्य समा' को भी मिलाना उचित समझा। इसमें किसी का दोष नहीं, यह तो समय की योग थी। परंतु उक्त तो इस बात का है कि 'जनता पार्टी' दूर्वासा पर अब पार्टियों ने तो किसी भी दूर्वासा से अपना अस्तित्व बना लिया, परंतु आर्य समाज अपनी फूट के कारण अपना कोई भी अस्तित्व नहीं बना सका। आर्य समाज एक धर्मिक व जनकल्याणकारी संस्थान है। इसे राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए, यह एक गलत और ग्रामक प्रचार है। वेदों में आर्यों को चक्रवर्ती राजा बनने तक ही आज्ञा है और हमारे वेदों में आर्य राजा श्रावण और चुधिष्ठिर आदि चक्रवर्ती राजा बने थे हैं। महर्षि दयानंद का द्वन्द्व भी यही था कि आर्यों का विश्व में चक्रवर्ती राज्य स्थापित हो। जब हमें वेद और महर्षि दयानंद ही चक्रवर्ती राज बनने की आज्ञा देता है, तो हमें राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए? मेरे विचार से आर्य समाज को राजनीति में भाग अवश्य ही लेना चाहिए। यदि नहीं लेता है, तो वह अपने कर्तव्य से छुप जाता है।

हमें 'कृपवतों विश्वम आर्यम्' के उद्घोष का ध्यान रखते हुए वेदों के सिद्धांतों का प्रचार व प्रसार जितना अधिक कर सके, उतना अधिक करते हुए लोगों का तन, मन, बुद्धि व आत्मा से आर्य समाज उनको चुनावों में विधायक व संसद बनाकर विधानसभाओं व संदर्भ में भेजना होगा। ताकि आर्यों का ही प्रदेश व केंद्र में मीठमंडल वर्ष सके, तभी भारत में रामराम्य की पुनः स्थापना हो सकेगी। इसलिए आर्य समाजियों का यह पावन कर्त है कि जब उसने सर्वेव ही देश की रक्षा की है, तो अब वर्षों सुख मोड़ता है। इसको चाहिए कि वह सब सद्य भारतीयों को जो भारत भूमि के ही अपनी मातृ-पितृ तथा पुण्यभूमि मानता है, उन सबको संगीतत करके एक 'ओऽम्' के झंडे के नीचे लाकर देश के आर्यों (सद्य इसानों) का राज्य स्थापित करें और भारत भूमि को 'स्वर्ण भूमि' बनावो। यदि आर्य समाजियों ने यह काम नहीं किया, तो फिर पीछे हमें पछताने के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगेगा।

काका हाथरसी ने आर्य समाज के लिए टीकी ही कहा था-

गरे, भारत नहीं छोड़ते, राजी-राजी।

अगर न देते योग देश के आर्य समाजी।

गुरुकुलीय प्रणाली के पुरोधा स्वामी श्रद्धानंद

मुन्द्र लाल कृष्णार्थ मित्रानन्

स्वामी श्रद्धानंद आर्य समाज की दिव्य

विभूति हैं। अपने अपर बलिदान एवं दिव्य

कर्मों के द्वारा आर्य समाज के इतिहास में

बाद मुंशीराम जी ने यह भीम प्रतिज्ञा ली कि

जब तब मैं गुरुकुल के लिए तीस हजार

रुपए की धनतेजि एकत्रित नहीं कर लूँगा

तब तक घर में कदम नहीं रखूँगा। उहोने

८ अप्रैल सन् १९०० तब चालीस हजार

रुपए एकत्रित कर लिए। तब महानिधि

महापुरुष का बचपन का नाम मुंशीराम था

और इनका जन्म वि.सं. १८९३ के फाल्गुन

मास में कृष्ण पक्ष की ब्रयोदशी के दिन

तलवार नामक स्थान पर जिना जालांधर में

हुआ। मुंशीराम के जीवन में ब्रयोदशी दिव्यानंद

के दर्शन लभ से ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन

आया कि वे मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम

और महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बन

गये। बरेती में स्वामी दिव्यानंद के प्रवचनों के

श्रवण (वि.सं. १९०३) एवं आशीर्वाद से मुंशीराम

के जीवन का कायाकर्त्त हो गया। महात्मा

मुंशीराम ने अपने जीवनकाल में जिन महात्मा-

कार्यों-जीवनाओं को अपने हाथ में लिया और

बड़ी मुत्तेवी के साथ क्रान्तिकारी क्रिया, उनमें

से मुख्य हैं-अद्वैतादार, अपूर्वता उन्मूलन,

शिद्धि, स्त्री शिक्षा, विद्यान-विद्याएँ, गुरुकुलीय

शिक्षा प्रणाली आदि। वे इसी सिद्धांतों का क्रान्तिकारी-

के लिए जिए और इन्हों के कारण, विशेषकर शुद्धि अंदोलन के कारण २३ दिसंबर १९२६

ई. देश-जाति और वैदिक धर्म पर मर-

पिए। स्वामी जी के शुद्धि अंदोलन से

उत्तेजित अद्वैत शिशु नामक एक धर्मार्थ

युवक ने उहों तब तीन गोलियों से भूत दिव्या,

जब वे डबल निमोनिया से रुण-शीश्य पर

लटे हुए थे। स्थिरानंदिष्ठ स्वामी जी अपने

जीवन से अजर-अमर हो गये।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) दूरदर्शी

एवं क्रान्तिकारी शिक्षाविद् थे। मिशन स्कूल में

पढ़ने वाली अपनी पुत्री के मुख से इसी

विद्यक एक गीत को सुनकर उहोंने न

केवल उसका खुल जाना बढ़ करवा दिया

वरन् तीन चार दिन के भीतर संबत् १९४७

में जालंधर में 'सोहन लाल आर्य कन्या

विद्यालय' की स्थापना भी की बही विद्यालय

आज कन्या महाविद्यालय, जालंधर के नाम

से विद्यालय है। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

को भी स्वामी जी का एक साहसिक कदम ही

माना जाएगा। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव पारित होने के

देश में ही नहीं, विदेशों में स्वयं को गौरवास्पद

रूप में स्थापित किया तथा गुरुकुल उपाधिव-

ियालंकार, वेदालंकार, ज्ञातक आदि को

अपने नाम के साथ लगाने में गौरव का

अनुभव करने लगे। भारतीय स्वाधीनता

सम्राट् में गुरुकुल के शालकों का उल्लंघनीय

योगदान कियी से छिपा नहीं है।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से शिक्षा के

क्षेत्र में क्रांति आई और एक नये धुग का

सुन्नत हुआ। स्वामी जी ने अपने जीवन

काल में अन्य अनेक गुरुकुलों की स्थापना भी

की तथा उनकी देखा-देखी पूरी देश में कालान्तर

में एक जाल-सा बिछ गया। स्वामी श्रद्धानंद

जी द्वारा रोपा गया पौधा गुरुकुल कांगड़ी

स्थापने के लिए उहोंने अपना सर्वव्य दान में दे

दिया था, आज बटवृक्ष का रूप धारण कर

चुका है और उसकी गणना देश के अत्यधिक

प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में की जाती है।

वस्तुतः स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुलीय शिक्षा

प्रणाली के पुरोधा हैं और इस द्वायित्व से उहोंने

दिव्यानंद के स्वयं को साकार किया है।

वैदिक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना उन

दिनों जान जोखिम का काम था। अंग्रेजों के

द्वारा ब्रह्मारियों के प्रशिक्षित करना एक

प्रकार से तकालीन शिक्षा भंगी लाई तो

शिक्षा नीति को चुनौती देने के समान था।

लाई भैकले की धोषणा थी कि अंग्रेजों के

निर्माण कर द्वारा कि जो रंग रूप में तो

भारतीय होगा, किंतु विचारों से अंग्रेज होगा।

(I will prepare a class of persons, Indian in blood and colour but English in ideas), अंग्रेजों का प्रयत्न भी विश्वास

के लिए या अपने उमाद को बढ़ाने के लिए या

उपयोगी पदार्थों को निर्माण करना आमुरी

दृष्टि या आसुरी सुंसरूपति का द्योतक है।

हम प्रकृति संस्कृति और विकृति के स्वरूपों

एवं उपयोगों की हृषि से विचार करके ही

इनके उपयोग कर्ताओं को तीन भागों में

विभक्त कर सकते हैं जो स्वयं लोगों के

लिए उपकारक हैं वह प्रकृति जो सभी लोगों

के लिए उपकारक है वह संस्कृति और जो

उन्मादियों के लिए ही सहयोगी है वह विकृति

। विवर के सभी विचारकों के विश्व में

प्रस्तर स्थिर भाव के संचार के लिए या

एकालम्बन के लिए इन पांच आधार भूत

केव्हों पर विचार कर इसके ही प्रचार प्रसार

का विचार करना चाहिए। और तभी होगा

केवल मानव मात्र का नहीं अपितु प्राणिमात्र

का कल्पण।

जब तक एक धर्म, एक भाषा और एक

जातीय लक्ष्य नहीं बनता तब तक जातीय

एकता और उन्नति सम्भव नहीं है। भाषा,

भाव और उद्देश्यों के एक से ही राष्ट्र की

उन्नति सम्भव है।'

- ऋषि दिव्यानंद

ईश्वर हमें तीन सौ वर्ष की आयु प्रदान करें

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

संसार का प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि वह स्वस्थ हो, बलवान हो, सुखी हो व सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं व आनन्द की सामग्री से सप्तन हो। इसके साथ ही वह दीधार्पु भी होना चाहता है। दीधार्पु हमारे पूर्व जन्म व इस जन्म में किये गए शुभ व पूण्य कर्मों का परिणाम प्रमात्रा करता है। मनुष्य को मृत्यु के बाद जो उसका प्रारब्ध होता है उसके अनुसार 'जाति, आयु व भोग' की प्राप्ति परमात्मा करता है। यहाँ जाति का अर्थ मनुष्य, पशु, पक्षी व अच्युतों से सम्बन्धित है। मनुष्यों में स्त्री व पुरुष दो जातियाँ ही हैं तथा पशुओं में गाय, भैंस, गधा, घोड़ा, कौयल, कौआ, तोता, कुत्ता आदि अनेक जातियाँ होती हैं। संसार में जितने भी मनुष्य हैं उनकी जन्मना कोई जाति यहि होती है तो वह केवल मनुष्य जाति ही होती है। 'वर्ण' मनुष्यों के ज्ञान व कर्मों पर आधारित होता है। जैसे कि यदि किसी ने चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सक की उपादि प्राप्त की है तभी वह चिकित्सक होता है। इसी प्रकार से अध्यापन के लिए भी किसी व्यावित विशेष का विद्वान होना आवश्यक है। व्यापार व कृषि के लिए भी इन कार्यों का आवश्यक ज्ञान होना चाहिये। इसी प्रकार से मनुष्य का वर्ण उसके ज्ञान व योग्यता पर निर्भर है। जन्म से वर्ण होनी होता क्योंकि बिना योग्यता अर्जित किए वर्ण का निर्धारण नहीं हो सकता। यदि ऐसा होता तो जिन ने ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर बाद में धर्म परिवर्तन कर ईसाई वा इस्लाम मत ग्रहण कर लिया, तो वह भी ब्राह्मण ही कहलाते। परन्तु ऐसा नहीं होता। अतः मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र अपने गुण, कर्म व स्वभाव से होता है। महर्षि दयानन्द गुण, कर्म व स्वभाव से वर्णों को मानते हैं और अपनी इस मान्यता को उन्होंने वेद, मनुस्मृति, तर्क व युक्ति आदि अनेक प्रकार से प्रमाणित किया है।

आज हम मनुष्य जीवन में आयु वर्षद्वे से सम्बन्धित यजुर्वेद के तीसरे अध्याय के बासठर्वे मन्त्र को प्रस्तुत कर यह बताना चाहते हैं कि यदि मनुष्य प्रयास करे तो उनकी आयु तीन सौ वर्ष तक की होना सम्भव है। यदि इतनी अधिक आयु न भी हो तो सद्कर्मों को करके हम इस जन्म में अपनी आयु को सामान्य आयु की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा सकते हैं और मध्ये के पश्चात प्राप्त होने वाले नये मनुष्य जीवन में निश्चयत ही हमारी आयु कहीं अधिक हो सकती है। आयु में वर्षद्वे से सम्बन्धित ईश्वर की प्रार्थना विषयक यह वेद मन्त्र प्रस्तुत है।

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्त्र त्र्यायुषम् ।
यद देवेषु त्र्यायुषं, तन्मो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

इस मन्त्र का त्रट्टि नारायण, देवता रुद्रः तथा छन्द चतुर्पाद उच्चिक है। मन्त्र में परमात्मा जीवात्मा वा मनुष्यों को शिखा देते हुए कहते हैं कि तुम ईश्वर से इस प्रकार से प्रार्थना करो कि हे रुद्र परमेश्वर (जमदग्नेः) प्रजलित अग्नि कर्मकांडों को और चमु इन्द्रिय को (त्र्यायुषं) त्रिगुणित आयु प्राप्त हो। (यद) जो (देवेषु) विद्वानों में (त्र्यायुषं) त्रिगुणित आयु होती है, (तत) वह (त्र्यायुषं) त्रिगुणित आयु हमारी हो।

इस मन्त्र का भावार्थ हम वेद मनीषी डा. रामनाथ वेदालंकार जी के शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं। हे परमेश्वर ! तुम रुद्र हो, रोग, वित्ता आदि को दूरकर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करनेवाले हो, जिससे दीधार्पु युष प्राप्त होता है। जैसे देवों अर्थात् निश्चय-परायण विद्वज्जनों को तुम 'त्र्यायुषं' प्रदान करते हो, वैसे ही हमें भी प्रदान करो। यह 'त्र्यायुषं' क्या है? विविध तापों व दुःखों से रहित, बाल्य-यौवन-वार्षक्य तीनों अवस्थाओं में सुखकर, इन्द्रिय-अन्तःकरण-प्राण तीनों की स्वास्थ्य-कर, ज्ञान-कर्म-उपासना तीनों से अनुप्राप्ति, विद्या-शिक्षा-परोपकार तीनों से युक्त तीन सौ वर्ष की आयु 'त्र्यायुषं' कहाती है। आज तो हम सामान्य सौ वर्ष की आयु भी नहीं जी पाते, विभिन्न देशों की औसत आयु सौ वर्ष से बहुत कम है। पर वेद का स्वर्ण है कि मनुष्य तीन सौ वर्ष की आयु प्राप्त करे। भाष्यकार ने तो यहाँ तक कहा है कि मन्त्र 'त्र्यायुषं' शब्द की चार बार आवृत्ति चतुर्थ शतक की भी घोषित है, इस प्रकार चार सौ वर्ष की आयु अभीष्ट है।

हमारे बीच में जो जगदग्नि ऋषि, अर्थात् अग्नि को गति देनेवाले प्रजलिताग्नि नर-नारी हैं, उन्हें 'त्र्यायुषं' प्राप्त हो। जीवन में अग्नि का प्रज्वलन आयु-क्षय-कारी समस्त व्याधियों को दूर करता ही है। 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार चमु इन्द्रिय का नाम भी जगदग्नि है, जो यहाँ सभी इन्द्रियों का उपलक्षण है एवं हमारे चमु, श्रेत्र, धारण, त्वक, रसना, मुख, पाणि, पाद आदि सभी अंगों को त्र्यायुष प्राप्त होना चाहिए। ऐसा न हो कि हम तीन सौ या चार सौ वर्ष जीवित तो रहें, पर विकलेन्द्रिय होकर। हमारे समाज के 'कश्यप' ऋषि, अर्थात् द्रष्टा मनीषियों को भी 'त्र्यायुषं' प्राप्त हो, जिससे विरकाल तक हमें अपने ज्ञानदर्शन का लाभ पहुँचाते रहें। कश्यप ऋषि शरीर में प्राण का नाम है एवं हमारे प्राण को

संसार रूपी धोसले में रहते हुए हम अपनी हष्टय गुहा
में प्रभु का दर्शन करें

मनुष्य जीवन का उद्देश्य प्रभु का दर्शन कर सभी दुःखों से 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक मुक्त रहना व ईश्वर के साथ है।

परंतु अनेक ऋषियों ने अतीत में ईश्वर का
एक जटदेश्य ही धर्म अर्थ काम त सोक्ष है

यदि हम अर्थ व काम का सेवन वेद विहित मर्यादाओं व धर्मानुसार नहीं करेंगे तो हम मुक्ति से वंचित होकर बन्धने व दुःखों में फंस जाते हैं। यजर्वेद के 32 वें अध्याय के आठवें मन्त्र में ईश्वर का मनुष्य की हृदय गुहा में विद्यमान होने, यह सारा संसार ईश्वर में एक घोसले के समान होने तथा यह सारा विश्व वा ब्रह्माण्ड ईश्वर से उत्पन्न होकर प्रलयावस्था में उसी में समाविष्ट हो जाने की बहुत महत्वपूर्ण शिक्षा दी गई है। इस मन्त्र व इसमें निहित रहस्यों का आज हम परिचय प्राप्त करा रहे हैं। आशा है कि पाठक इससे लाभान्वित होंगे। मन्त्र है

वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद् यत्र विश्वं भवयेकनीडम् ।
तस्मिन्नदं सं च विचैति सर्वं स ओत् प्रोतश्च विभूः प्रजासु ॥

इस मन्त्र का ऋषि स्वयम्भु ब्रह्मा, देवता परमात्मा एवं छन्द निचष्ट त्रिष्टुप् है। मन्त्र के पदों का अर्थ इस प्रकार है। (वेन:) मेधावी, इच्छुक, गतिमय, अर्चनाशील, श्रवण-चिन्तनशील, मनुष्य (तत्) उस ब्रह्म को (पश्यत) देख लेता है।

[जो ब्रह्म] (गुहा निहित सत) गुहा में निहित है, गुप्त है, (यत्र) जिसमें (विश्व) विश्व (एकनीड) एक घोसलेवाला, एक आश्रयवाला (भवति) होता है। (तस्मिन्) उस [ब्रह्म] में (इदं सर्वं) यह सब {जगत्} (सम एति च) समाविष्ट जो जात है, (वि एति च) {उत्पत्तिकाल में} बाहर निकल आता है। (सः) वह (विभूः) व्यापक ब्रह्म (प्रजासु) प्रजाओं में (ओता स्तुते च) स्तुते हैं, स्तुते हैं।

प्रोतः च) ओत और प्रोत है।
इस वेदमन्त्र के पदों के अर्थ और व्याख्या हम वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् डा. रामनाथ वेदालंकार जी की पुस्तक 'वेद मंजरी' से दे रहे हैं। मन्त्र का भावार्थ वा व्याख्या करते हुए वह लिखते हैं कि परमात्मा गुहा में निहित है, गुह्य है। जो मेधावान् है, जिसके अन्दर ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय हो गया है, जिसे प्रभुदर्शन की उत्कट लालसा लगी हुई है, जो कर्मण्य है, जो अर्चनाशील है मन से उसे पाने के लिए प्रवष्ट होता है, जो श्रवणशील और चिन्तनशील है, वही उसके दर्शन कर पाता है। वह प्रभु सबका आवास—स्थान और आश्रय—स्थान है। हर मनुष्य, मनुष्य ही क्यों, जगत् का प्रत्येक जड़—चेतन उस पर मानो अपना—अपना घोंसला बनाकर बैठा हुआ है। वक्ष पर घोंसले में बैठा पक्षी भले ही समझता रहे कि मेरा आश्रय तो घोंसला है। पर असल में उसका आश्रय वक्ष होता है। इसी पकार हम लोग आनन्दी

हा सन्निहिता रह के नरा आश्रय ता धासला है, पर असल में उसका आश्रय वज्ञा होता है। इसा प्रकार हम लाग अपनी नासमझी के कारण चाहे इस भ्रम में पड़े रहें कि हमारे आश्रय मकान—महल, सखा—कुटुम्बी राजे—महाराजे आदि हैं, पर वस्तुतः तो वह प्रभु ही हमारा अन्तिम आश्रय—स्थान है। उसका हाथ, उसकी छत्रछाया, उसकी सहायता, उसका आश्वासन हट जानेपर हम एक पग भी नहीं चल सकते, एक सांस भी नहीं ले सकते। उसका आधार खिसकते ही हमारे आश्रय बने हुए ये भव्य भवन, ये ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएं, ये मीनार—मन्दिर—गुम्बद, ये विद्युत्प्रदीपों से जगमगाते हुए शानदार नगर सब क्षण—भर में धराशायी हो जाएं। उसका हाथ हट जाने पर धरती—आसमान भी रो उठें।

यह समस्त जगत्प्रपञ्च सष्ट्युत्पत्ति के समय उसी ब्रह्म में से बाहर निकल आता है और प्रलयकाल में उसी के अन्दर समा जाता है। जैसे मकड़ी की आत्मा मकड़ी के शरीर से जाले को बाहर निकालती है और फिर जाले को शरीर में ही समेट लेती है, वैसे ही ब्रह्म अपने शरीर भूत—प्रकृष्टि से जगत्—प्रपञ्च को सज्जता है और फिर अपने प्रकृष्टिरूप शरीर में ही समेट लेता है। जैसे पष्ठिवी बीज में से ओषधियों को उत्पन्न करती है,? वैसे ही ब्रह्म प्रकृष्टिरूप बीज से सष्टि उत्पन्न करता है। जैसे मनुष्य का चेतन आत्मा शरीर में से केश और रोगों को प्रकट करता है, वैसे ही ब्रह्म अपने प्रकृष्टिरूप शरीर में से विश्व को प्रकट करता है। ब्रह्म अपनी रथी हुई सब प्रजाओं के अन्दर ओत—प्रोत भी है (अर्थात् सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी)। घट को रचने वाला कुम्भकार घट के अन्दर ओत—प्रोत नहीं होता। पर प्रभु की लीला विचित्र है, वह अपनी रथी हुई प्रजाओं को धारण करने के लिए उनके अन्दर ओत—प्रोत भी है (अर्थात् उन सब में समाया हुआ है)। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रपञ्च का ऐसा महान् उत्तरदायित्व जिसने अपने ऊपर

लिया हुआ है, आओ, उस प्रभु के चरणों में नमस्कार करें और 'वेन' बनकर उसके दर्शनों से कष्टकष्ट्य हों।
इस वेदमन्त्र में बताया गया है कि ईश्वर मनुष्य की हष्ट्य गुहा में हर क्षण व हर पल विद्यमान है अर्थात् समाया हुआ है। ओत-प्रोत व सर्वत्र विद्यमानता वा उपरिथिति उसी सत्ता की हो सकती है जो सर्वव्यापक और

सर्वान्तरयामी हो। वस्तुतः ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने के कारण ही हमारे भीतर व बाहर ओत-प्रोत है। हमें शुद्ध भोजन व सात्रिक चिन्तन से वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपनी बुद्धि को निर्मल व पवित्र बनाना है। ऐसा होने पर ईश्वर का अपनी हृष्टय गुहा में चिन्तन व ध्यान करने पर वह परमात्मा उपासक के लिए अपने यथार्थ स्वरूप का प्रकाश कर देता है। इस स्थिति का वर्णन करते हुए मुण्डक उपनिषद में कहा गया है कि “भिद्यते हृष्टयग्रथिश्छयन्ते सवसंशयः। क्षीयन्ते चास्य कर्मणि तस्मिद्दृष्टे पराऽऽवरे।” जब (स्वाध्याय व वैदिक साधना से) इस जीव के हृष्टय की अविद्या-अज्ञानरूपी गांठ कट जाती है तब सब संशय छिन्न-भिन्न हो जाते और दुष्ट वा पाप कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं। तब वह परमात्मा जो कि अपनी आत्मा के भीतर और बाहर व्यापक हो रहा है, उसका साक्षात्कार कर लेने पर निर्भात होकर उसमें निवास करता है। ईश्वर में आनन्द की पराकार्षा है, अतः जीवात्मा को ईश्वर का साक्षात्कार हो जाने पर जीवात्मा भी ईश्वर के आनन्द की पराकार्षा का अपनी सामर्थ्यानुसार अनुभव करता है। अपनी-अपनी आत्मा की यही स्थिति संसार के सभी जीवों वा मनुष्यों के लिए प्राप्त करने योग्य है। यह संसार का शायद सबसे बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य अपने यथार्थ लक्ष्य ईश्वर का ज्ञान व साक्षात्कार को भूल कर सारा जीवन धन-दौलत के संग्रह में ही व्यतीत कर देता है। वह संसार से शुभकर्म फलों की पूजी के नाम पर खाली हाथ ही संसार से नहीं जाता अपितु पाप की गतरी ले जाता है जिसका परिणाम भावी जन्मों में निरन्तर दुःखों का मिलता होता है। अतः इस वेदमन्त्र का लाभ उठा कर इससे अभिज्ञ मनुष्यों को वेदां व वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय कर ईश्वर के स्वरूप को जानकर हृष्टय गुहा में ईश्वर का ध्यान व चिन्तन करना चाहिये जिससे ईश्वर की कष्टा होने पर उस सर्वव्यापक व सबमें ओत-प्रोत प्रभु का यथासमय दर्शन हो सके। यह भी ध्यान रहे कि प्रभु दर्शन-श्रवण-चिन्तनशील ईश्वर दर्शन का इच्छुक, गतिमय, अर्धनाशील, श्रवण-धोन्यों से उत्पन्न होती है और प्रलय के समय उसी में समाविष्ट हो जाती है। ईश्वर ही इस सर्वष्टि का रचयिता व पालनकर्ता है। यह अन्य वैज्ञानिक रहस्य भी इस मन्त्र से स्पष्ट हो रहा है।

लेख का अधिक विस्तार न कर हम निवेदन करते हैं कि कि आईये, मन्त्र के प्रत्येक पद व शब्द पर विचार व चिन्तन करें और इस सुष्ठि यज्ञ के रचयिता परमेश्वर का अपनी हृदय गुहा में ध्यान कर उसका दर्शन करने का प्रयत्न करें और अपने जीवन को सफल बनाये। वेदानुसार इस स्थिति को प्राप्त हों कि हम कह सके कि “वेदाहमेतत् पुरुष महान्त आदित्य वर्णम् तमः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नायः पन्था विद्यतेऽपनाय।” मैंने उस महान परमेश्वर को जान लिया वा देख लिया है। वह सूर्य के समान प्रकाशित व अन्धकार से सर्वथा पृथक है। उसी परमेश्वर को जानकर मैं मृत्यु रूपी दुख से निवृत हो गया हूँ वा मृत्यु के दुख से पार हो गया हूँ। मृत्यु रूपी दुख से बचने का संसार में अन्य कोई उपाय नहीं है अर्थात् ईश्वर को जानकर वा दर्शन कर ही मनुष्य मृत्यु रूपी दुःख पर विजय प्राप्त कर सकता है।

-मनमोहन कुमार आय

भी ‘त्र्यायुष’ प्राप्त हो। हम जब तक जीवित रहें, प्रशस्त प्राणों से युक्त रहें। हमारे प्राण, अपान आदि सम्पूर्ण प्रकार से प्राणन, अपानन आदि कियाओं को करते रहें।

वेद में मनुष्यों को ईश्वर से तीन सौ से चार सौ वर्ष की आयु मांगने का ज्ञान व प्रेरणा की गई है। हमारी जितनी अधिक लम्बी व रक्षण आयु होगी, हम उतना ही सुख भोग सकते हैं और साथ हि देश व समाज के लिए भी कुछ विशेष कार्य कर सकते हैं जिससे मानव जाति लाभान्वित हो। 300 वर्ष की यह आयु असम्भव नहीं है। नैट से हमें पता चला है कि 160 व इससे भी अधिक आयु के मनुष्य इधोपिया व अन्य देशों में हुए हैं। यदि मनुष्य का आहार, विहार, विचार, ज्ञान, निद्रा, ध्यान व व्यायाम आदि सञ्चुलित व संयमपूर्वक वेदानुसार हो तो हमें लगता है कि मनुष्य की आयु अधिक हो सकती है और मनुष्य 300 वर्ष के निकट भी पहुँच सकते हैं। आजकल भी आयु को बढ़ाने के लिए देश विदेश के विदेशी शास्त्री अनुसाराना कार्य कर रहे हैं। उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली है और आशा है कि आने वाले समय में, वह अवश्य ही ऐसी खोज करेंगे जिससे हमारी आयु वर्तमान समय से कहीं अधिक हो सकती है। मनुष्य जीवन का उददेश्य सदकर्म करना तथा दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करना है। अधिक सदकर्म व साधना के लिए मनुष्यों को निश्चय ही लम्बी आयु की आवश्यकता है। ईश्वर से प्रार्थना करने पर इच्छित वस्तु अवश्य प्राप्त होती है यदि वह सम्भव कर्ति में हो और उसके लिए उपयुक्त पुरुषार्थ किया गया हो। बहुत से धार्मिक व सज्जन लोगों का ऐसा अनुभव है। आईये, हम नित्य प्रति यजुर्वेद के आयु बुद्धि करने वाले उपर्युक्त मन्त्र का पूरी श्रद्धा के साथ पाठ किया करें और स्वास्थ्य के सभी नियमों का पालन करने का संकल्प लें।

'जन्म—मरण से छूटने का एक ही उपाय
ैतिक मन्त्र्या और निवारकर्म'

वादक सन्ध्या आर नत्यकम्

—मनमोहन व

षटि बनाई है और इसमें हमारे सुख के लिए नाना भी हमें ईश्वर से निःशक्त प्राप्त हआ है जिसके

प्रकार के पदार्थ बनाकर हम निशुल्क प्रदान किय ह। वहा नहा, हनरा शरीर ना हन इरपर सा ना-सुख प्राप्ति दुजा ह। जिरन्दा आधार हमारे पूर्व जन्मों के कर्म वा प्रारब्ध है। हम ईश्वर के इन उपकारों के लिये कष्टज्ञ हैं। हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर ही कष्टज्ञता से बच सकते हैं। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो हमें भावी जन्म-जन्मान्तरों में मानव जीवन का सदुपयोग न करने का भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा, इसमें किंचित् सन्देह नहीं है। हमारे ऋषि मुनियों ने हमारा यह काम आसान कर दिय है। महाभारत काल तक का समस्त वेद व धर्म संबंधी साहित्य अब सुलभ नहीं है। महाभारत युद्ध के बाद सारे विश्व में अज्ञानान्तर कार फैलने से सन्ध्या व यज्ञ की वैदिक सत्य पद्धतियां विलुप्त हो गई थीं जिन्हें उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महर्षि दयानन्द जी ने अपने अपूर्व वैदिक ज्ञान, पुरुषार्थ व तप से हमें पुनः उपलब्ध कराया है। उनके द्वारा ब्रह्मयज्ञ वा सन्ध्योपासना हेतु पंचमहायज्ञ विधि की रचना की गई। इसमें प्रमुख ब्रह्मयज्ञ जिसे ईश्वरोपासना भी कहते हैं, उसका सविस्तार वर्णन किया है और उसकी पूरी विधि भी लिखी है। सन्ध्योपासना विधि में शिखा बन्धन, आचमन, इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अधर्मषण व मनसा परिक्रमा के मन्त्रों व उनके संस्कृत व आर्य भाषा हिन्दी में अर्थों व विधियों को लिखकर व समझाकर दयानन्द जी ने उपस्थान मन्त्रों को लिखा है और इसके बाद गायत्री मन्त्र, सर्मर्पण मन्त्र व अन्त में नमस्कार-शान्तिपाठ के मन्त्रोच्चार से सन्ध्या का समाप्ति किया है। ईश्वरोपासना की संसार में यह सर्वोत्तम व एकमात्र विधि है जिससे लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति होती है। आज के लेख में हम उपस्थान के मन्त्रों को अर्थ सहित प्रस्तुत कर रहे जिससे पाठक इनसे परिचित होने के साथ इनका महत्व जान सकें और इसका सेवन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूपी लाभ प्राप्त कर सकें।

उदुत्य जातवदस दव वहान्त कतवः । दद्धा विश्वाय सूयन् ॥ यजुर्वेद ३३ / ३
 चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुमित्रस्य वरुणस्याग्ने । आप्रा द्यावापर्षविथीः अन्तरिक्षं सूर्योऽ आत्मा जगतस्तरथुषश्च स्वाहा ॥ । यजुर्वेद
 7 / 41
 तच्छक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुकमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रुण्याम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः
 शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ यजुर्वेद 36 / 24

आईये, अब इन 4 मन्त्रों के कमशः हिन्दी में भाषार्थों को भी कमशः जान लेते हैं ।

इन मन्त्रों में सन्ध्या, उपासना वा ध्यान करने वाला भक्त ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे परमेश्वर ! सभी अन्धकार से अलग, प्रकाशस्वरूप, प्रलय के पीछे सदा वर्तमान, देवों में भी देव अर्थात् प्रकाश करने वालों में प्रकाशक, चराचर आत्मा, जो ज्ञानस्वरूप और सबसे उत्तम आपको जान कर हम लोग सत्य को प्राप्त हुए हैं । हमारी रक्षा करनी आपके हाथ है क्योंकि हम लोग आपकी शरण में हैं ।

हे ईश्वर ! ऋग्वेदादि चार वेद आपसे ही प्रसिद्ध हुए हैं, आप ही प्रकृत्यादि सब भूतों में व्याप्त हो रहे हैं तथा आप सब जगत् के उत्पत्तिकर्ता हैं, इन कारणों से आप 'जातवेदा' के नाम से प्रसिद्ध हैं । आप सब देवों के देव और सब जीवादि जगत् के भी प्रकाशक हैं । अतः आपकी विश्वविद्या की प्राप्ति के लिये हम लोग आपकी उपासना करते हैं । हे परमेश्वर ! आपको वे की श्रुति और जगत् के पथक-पथक रचना आदि नियामक गुण जनाते और प्राप्त कराते हैं । आपके विश्व के सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी स्वरूप की ही हम उपासना करें अन्य किसी की नहीं क्योंकि आप सर्पेपरि हैं ।

प्राणों और जड़ जगत् के स्वामी व आत्मा को 'सूर्य' कहते हैं। हे ईश्वर ! आप ही सूर्य और अन्य सब लोकों को बना कर उनका धारण और रक्षा करने वाले हैं। आप ही रागद्वेषरहित मनुष्यों तथा सूर्य लोक और प्राणों का प्रकाश करने वाले मिथि

के समान हैं। आप ही सब उत्तम कामों तथा वर्तमान मनुष्य में प्राण, अपान और अग्नि का प्रकाश करने वाले हैं, आप ही सकल मनुष्यों के सब दुःखों का नाश करने के लिये परम उत्तम बल हैं, वह आप परमेश्वर हमारे हृष्टयों में अपने गण्डर्ष रूप से प्रकाशित हैं। हे ईश्वर ! आप ब्रह्म हैं अर्थात् आप सब से बड़े हैं। आप सब के द्रष्टा और धार्मिक विद्वानों के परम द्वितकारक हैं। आप सर्वित के पूर्व पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से वर्तमान रहते हैं। सब जगत् के बनाने वाले आप ही हैं। हे परमेश्वर ! आपको हम लोग सौ वर्ष पर्यन्त तक जीवित रहें, सौ वर्ष पर्यन्त तक कानों से आपकी स्तुति व महिमा के गीतों को सुनें और आपकी महिमा का ही सर्वत्र उपदेश करें। हे परमेश्वर ! हम आपकी कष्ट से कभी किसी के आधीन न रहें अर्थात् परमानन्द न हों तथा सदैव स्वर्णधीन रहें। आपकी ही आज्ञा का पालन और कष्ट से हरी वर्षों के उपरान्त भी देखें, जीवे, सुर्जे-सुनावे और स्वतन्त्र रहें। आरोग्य शरीर, दृढ़ इन्द्रिय, शुद्ध मन और आनन्दसहित हमारा आत्मा सदा रहें। हे ईश्वर ! आप ही एकमात्र सभी मनुष्यों के उपासना देव हैं। जो मनुष्य आपको छोड़ कर आप से भिन्न किसी अन्य की उपासना करता है, वह पशु के समान होके सदैव दुःख भोगता रहता है।

इन उपस्थान के 4 मन्त्रों के भाषार्थ लिखकर महर्षि दयानन्द के एक बहुत महत्वपूर्ण पंक्ति यह लिखी है कि मनुष्य वा उपासक ईश्वर के प्रेम में अत्यन्त मन छोड़ कर अपनी आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ कर उपर्युक्त मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहें। इन उपस्थान के मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करते हुए सर्वान्तर्यामी ईश्वर को अपनी आत्मा में अनुभव करना है। मल, विक्षेप व आवरण के होने के कारण ईश्वर का प्रत्यक्ष होने में बाधा आती है। निरन्तर उपासना से मल, विक्षेप व आवरण कट व छंट जाते हैं और ईश्वर का प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार ईश्वर की कृपा होने व उपासक में उसकी पात्रता होने पर हो जाता है। यह साक्षात्कार ही मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा पुरुषार्थ रूपी धन है। इस धन से संसार का सबसे अधिक आनन्द तो मिलता ही है, जन्म व मरण से छूटकर बहुत लम्ही अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक मुक्ति का सुख प्राप्त होता है। यदि यह कार्य इस जीवन में नहीं किया तो फिर युगों-युगों तक यह अवसर दूवारा मिलेगा या नहीं, इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। बिना वैदिक विधि की उपासना किए केवल अच्छे कर्मों से ही ईश्वर के साक्षात्कार का लाभ व आनन्द तथा मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इसके लिए ईश्वरोपासना सहित पच महायज्ञ व सभी वैदिक कर्मों का करना परमावश्यक है अन्यथा मन्त्रोपरान्त दुःख ही दुःख भोगना होगा। यह हमारे तत्त्वदर्शी ऋषियों की सर्वसम्मत घोषणा है।

उपस्थान के मन्त्रों का पाठ व तदनुरूप भावना करने के बाद गायत्री मन्त्र का पाठ, समर्पण मन्त्र और नमस्कार मन्त्र का भी विधान है। इसे पूरा करके सभ्या समाप्त होती है। यह तीन मन्त्र क्रमशः निम्न हैं:

गायत्री मन्त्र = ओ३३ भूर्भुः सः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्त्यौ देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ यजुर्वेद 36/3

समर्पण मन्त्र = हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कव्याऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मर्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेनः।

नमस्कार मन्त्र = ओ३३ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नः शंकराय च मयस्काराय च नः शिवाय च शिवतराय च ॥

गायत्री मन्त्र का संक्षिप्त अर्थ = ईश्वर हमारे प्राणों का भी प्राण अर्थात् वह हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है, वह दुःख निवारक है तथा सभी सुखों को देने वाला है। ईश्वर सब जगत् को उत्तम करने वाला है तथा सब ऐश्वर्य का देने वाला है। सब की आत्माओं का प्रकाश करने वाला और सबको सब सुखों का दाता है। वह अत्यन्त प्रहण करने योग्य है। वह शुद्ध विज्ञानरूप है तथा हम लोग आपको प्राप्ति से निश्चय करके उसे अपनी आत्मा में धारण करें। किस प्रयोजन के लिये? इसलिये कि वह संविता देव परमेश्वर हमारी बुद्धियों को कृपा कामों से हटाकर सदा उत्तम कामों में प्रवृत्त करे।

समर्पण मन्त्र का भाषार्थ = हे ईश्वर दयानिधे ! आपकी कष्टा से जो-जो उत्तम काम हम लोग करते हैं, वे सब आपको समर्पित हैं। हम लोग आपको प्राप्ति हाँकर धर्म जो सत्य न्याय का आवरण करना है, 'अर्थ' जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है, 'काम' जो धर्म और अर्थ से इष्ट भीगों का सेवन करना है और 'मोक्ष' जो सब दुःखों से छूटकर सदा आनन्द में रहना है। इन चार पदार्थों की सिद्धि हमको शीघ्र प्राप्त हो।

नमस्कार मन्त्र = हे सुखरूप ईश्वर ! आप संसार के उत्तम सुखों को देने वाले हो, कल्याण के कर्त्ता हो, मोक्षरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करते हो, अपने भक्तों को सुख को देने वाले हो और धर्म कामों में युक्त करने वाले हो, अत्यन्त मांगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष का सुख देने वाले हो। इसलिए हम बार-बार आपको नमस्कार करते हैं। नमस्कार मन्त्र के बाद ओ३३ शान्ति: शान्ति: बोलने का विधान है। तीन बार शान्ति: शब्द का उच्चारण करने का उद्देश्य यह है कि ईश्वर द्यु-लोक, अन्तरिक्ष लोक तथा भूलोक में शान्ति रखें।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस संक्षिप्त लेख में प्रस्तुत विचारों को लाभप्रद अनुभव करेंगे। यदि किसी भी पाठक को इस लेख से कुछ लाभ होता है तो हम अपने परिश्रम को सार्थक समझेंगे।

వనులు స్తంభించి పోయాయి. కేంద్రమంత్రులంతా యోగా దినం నందర్శంగా జరిగిన కార్యక్రమాల్లో పాల్గొనడంలో తలమునకలైపోయారు. ప్రతి నాయకుడూ ఏదో ఒక యోగాసన విన్యసం చేసిన వారే. కానీ మర్మాటి నుంచి చిక్కడా యోగా ఊసు విషపడడం లేదు. పారుళ్లో యోగా శిబిరాలు నిర్వహించిన కేంద్ర ప్రభుత్వ ఆయుష్ మంత్రిత్వ శాఖ ఎక్కడా కనపడడం లేదు. రోజు అక్కడక్కడా యోగా శిబిరాలు నిర్వహించే బైత్పుహికలే కాని జూన్ 21 ముందు కనపడిన సందడి ఎక్కడా గోచరించడం లేదు. చేసేవారు ఎలాగూ చేస్తారు. కానీ యోగా గురించి వచ్చిన ఊపు మాటేమిటి? అది కేవలం పొంగేనా?

స్వచ్ఛభారత గురించి కూడా ఇదే విన్యసం సాగింది. గాంధీ జయంతి నందర్శంగా స్వచ్ఛభారత్ ను ప్రారంభించడానికి ముందు ఇదే ఊపు కనఱింది. నేతులంతా రోధు ఊచ్చారు. రాష్ట్రపతి, ప్రధానమంత్రి, కేంద్రమంత్రులు,

నేతలు, కార్యక్రమంలో పడ్డారు. కొంతమంది రోడ్స్‌పై లేని చెత్తను తీసుకువచ్చి ఊచ్చి భోటోలు తీయించుకున్నారు. స్వచ్ఛభారత్ పేరిట లక్షలాది రూపాయలతో ప్రకటనలు గుప్పించారు. ఏమైనపుటీకి స్వచ్ఛభారత్ ఒక ఉద్యమంగా మారలేదు. ప్రధానమంత్రే న్వయంగా ఈ కార్యక్రమాన్ని ప్రారంభించినా, మునిసిపల్ సిబ్జుండికి సకాలంలో జీతాలు చెల్లించకపోతే దేశ రాజదాని కూడా చెత్తకుండీగా మారుతుందని రుజువైంది. ప్రజలు తమ వాహనాలక్రింద, కాళ్ళక్రింద వ్యర్థాలు ప్రవహిస్తున్నా పట్టించుకోకుండా ముక్కులు మాత్రం మూసుకుని తమ పనుల్లో తాము పడ్డారు. ఎంత మంచి కార్యక్రమమైనా అది ప్రజల్లో ఉద్యమ రావు డాల్ఫ్స్ పోతే విఫలమవుతుందని న్వచ్ఛభారత్ నిరూపించింది. అదే గతి యోగాకు కూడా పడుతుందా? ఇది ఒక పరిశీలన అయితే యోగాసనాలకు నరేంద్ర మోది ఇచ్చిన ప్రాముఖ్యం, ఆయన మంత్రివర్ధ సహచరులు కానీ, ఇతర నేతలు కానీ ఇస్తున్నారా అన్నాడికూడా చర్చానీయాంశం కావాలి.

రాష్ట్రపతి హమిద్ అన్నారి రాలేదిందుకు ప్రజల డబ్బుతో నడిచే రాజ్యసభ టీవీలో తల కార్యక్రమాన్ని ఎందుకు చూపలేదు? అసి భీజేపీ ప్రధాన కార్యదర్శి రాంమాధవ్ టీవీ చేయడం వివాదాన్ని స్పష్టించింది. అసలు ఉపరాష్ట్రపతిని సంబంధిత మంత్రిత్వశాఖ తల కార్యక్రమానికి ఆహ్వానించిందా? నిజంగా రాజ్యసభ టీవీ ఈ కార్యక్రమాన్ని ప్రసారించే సేందా లేదా అన్న విషయాల్ని కూడా ఆయన తెలుసుకునే ప్రయత్నం చేయలేదు రాంమాధవ్ అలా టీవీ చేయగానే ఇతర భీజేపీ పెద్దలు కూడా అత్యుత్సాహంతో ఆయనను సమయించేందుకు ఘాసుకున్నారు చివరకు ఉపరాష్ట్రపతిని తాము ఈ కార్యక్రమానికి ఆహ్వానించలేదని ఆయుష్మి మంత్రిత్వశాఖ వివరణ ఇచ్చిన తర్వాత రాంమాధవ్ తన మాటల్ని వెనక్కు తీసుకున్నారు యోగా దినోత్సవానికి ముఖ్య అతిథిగా ప్రధానిని ఆహ్వానించామని, ప్రధానమంత్రీ ముఖ్యాలతిథిగా ఉన్న ఒక కార్యక్రమంలో భీజేపీకార్లో ఆయన కంటే అధిక స్థాయిత్వం ఉన్న ఉపరాష్ట్రపతిని ఆహ్వానించడం సంప్రదాయం కానందువల్లే ఆయనను ఆహ్వానించలేదని ఆయుష్మి కాకి

నహోయమంత్రి శ్రీపాద నాయక్ వివరణ
జచ్చారు. రాంమాధవ్ ఈ విషయం తెలిసి
ఉండకపోవచ్చునని, ఈ పొరపాటుకు తాము
ఉపరాప్రతికి క్షమాపణ చెబుతున్నామసి
కూడా నాయక్ తెలిపారు. హమీద్ అన్నార్
ముస్లిం కాకపోతే రాంమాధవ్ ఈ ప్రకటన
చేసేవారా? అంటే ముస్లింలంట
అయినకంత ద్వేష భావం ఉందా? తద్వారా
బీజేపీ ఎవరి పార్టీయో చెప్పేందుకు ఆయిన
పూనుకున్నారా? అటువంటమృడ
ముస్లింలను ప్రక్కన పెట్టుకుని అసనాల
వేయడం ఎందుకు? మోదీతో ఆసనాల
వేసేందుకు ఉత్సవకు ప్రదర్శించడమే కాదు
యోగా నేర్చే స్థిత ప్రజ్జత, సంయుమనం
చిత్తవ్యత్తులను నిరోధించడం కూడా నేతలక
అవసరమని ఈ ఘటన నిరూపించింది
మయిఖ్యంగా భారతీయ నంన్నుతిసి
ఒంటట్టించుకున్నామని చెప్పుకునే బీజేపీ
నేతలకు యోగా చెప్పే విలువల
నేర్చుకోవడం మరింత అవసరం.

వారంజాడా (ఆక్రమ సంతానంల్లో ఎవరి
ఓటు వేయాలో తేల్పుకోవాలని ప్రజలక
పిలుపిచ్చిన కేంద్రమంత్రి సాధ్య నిరంజన
బీజెపీలో ఉన్నవారే. నాలుకపై అదుపులేసి
వారు శరీరం, మననును అదుష
చేసుకోగలరా? కేవలం రెచ్చగొట్టే వ్యాఖ్యల
చేయకపోవడమే కాదు, సైతిక విలువల
తమలో ఉన్నాయని చెప్పుకున్నప్పుడు
యోగాకు సార్థకత లభిస్తుంది. ఆర్కిక నేరాల్లో
చిక్కుకున్న ఒక వ్యాపారవేత్త విదేశాల్లో తు
దాచకున్నప్పటికే వారికి సహాయం
చేసేందుకు కేంద్రమంత్రులు, ఒక
ముఖ్యమంత్రి పోటీపడడం, ఒకరి అవినీతిమాన
మరొకరు సమర్థించుకోవడ బీజెపీ చెప్పుకున్న
విలువల్ని మరింత ప్రశ్నార్థకం చేసింది
అటువంటప్పుడు ఎన్ని యోగా దినోత్సవాల
నిర్వహించినా ప్రయోజనం లేదు.

అనులు మహాత్ముడు

'అంతా పాపులే... దేవుళ్లు దొంగలే'

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

ముస్తీరాం పుట్టింది ప్రథమ స్వాతంత్ర్య సంగ్రామానికి విదాది ముందు. 1856 శిశ్రమ 22వ పంచాలోని జంబుర్ జ్ఞాతల్వాన్ గ్రామంలో. సుశ్రుతియ కుటుంబంలో. నిరంది ముదీ, ఆరారం నిశ్చగా పోలీంచే సంప్రదాయం కుటుంబం. తాతలగే తండ్రి కూడా కిఫాత్కుడు. తల్లికి పూజల పునస్సాలు జాస్తి. ఇదుగురు విజ్ఞాత రథవాత పుట్టిన కడగ్గట్ట బిధ్యక కవితా ముస్తీరాం (మొదట పెట్టిన పేరు ఇప్పస్తి. పలకటం కుటుంబాని దాన్ని ముస్తీరాంగా తరవాత మార్పారు) అఖ్యాతముర్చూగా పెంచింది. తండ్రి నాయకరాం కుటుంబియా కంపెనీ కొలపలో పోలీంగు అధికారి. ఉద్యోగరీత్యాగ ఈశ్వర చిరంగుతూండేవాడు. తరచు బింబిలుందేవి. దానిలేద్ద కీళవాది ప్రధమ సరిగు సాగలేదు. తండ్రికి క్రొం తీరిక లేకపోవటం, తభ్య గారాబం అఖ్యాయిని తెడగొట్టాడు.

దానికించే చెడ సావాసలు. చిన్నతనంలోనే ఒడి ఎగ్గోటీ బలదూరుగా తిరగం, భాగున, సాంగా తాగబు, చీళ్ల పేక ఆడటం అలావాత్రీంది. వయస్సాచ్చక పడుపుగ్గెలను పురిగాడు. కొల్యాగుంచి అబ్బాయి కావటంపల్ల ఎవరా మందిరిలేవారు కారు. మొరట్లో కాస్తే కూస్తే దేవుడి మీద గరించేది. పోసపోసు అది పోయింది.

దానికి కొన్ని కారణాలున్నాయి.

ముస్తీరాం విద్యాభ్యాసం ఎక్కుపూగా కాశీలో ఉనింది. తండ్రి అక్కడి కొత్స్యాయి. చిన్నప్పుడు దైపథక్తి భాగానే ఉన్నది. తరమా గుర్తికి విశ్వాసాని దుర్శన చేసుకొనాడు.

1915 ఏట ఓ రోజు సాయంత్రం

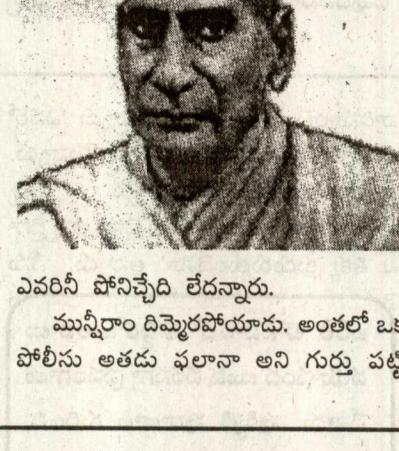
శీకటి పడ్డక అలయానికి వెళ్లాడు.

ప్రధానాలయం గుమ్మం బయట

జడ్డు పోలీసులు కాపాల ఉన్నారు.

లోను రేవ మహారాజీ గారు

ఉన్నారు. ఆపే అర్పన ముగ్గేరాకా



ఎవరిని పోనిచేది లేదన్నారు.

ముస్తీరాం దిష్టుపోయాడు. అంతలో ఒక

పోలీసు అతడు పలానా అని గుర్తు పట్టి

చిరంగుతూండేవాడు. తరచు బింబిలుందేవి.

దానిలేద్ద కీళవాది ప్రధమ సరిగు

సాగలేదు. తండ్రికి క్రొం తీరిక

లేకపోవటం, తభ్య గారాబం

అఖ్యాయిని తెడగొట్టాడు.

చెడువు పట్టదు. జూలాయలా లిరుగుతాడు. చెడు

సావాసలు. మాంసం లేనివే ముద్ద దిగదు. చెడ

తాగుతాడు. సాంనివాదల చుట్టూ తిరుగుతాడు. పక్క

ప్యాథిచారి. దేవుడిని ముష్టు. భైగా తిడతాడు. పరమ

నాస్తికుడు. హీందూ మతమంటే మంట. సాధు

సంతులంటే అనచ్చోం.

ఇదీ అవతార! ఉండాల్చిన అవలక్ష్మాలు అన్నీ

ఉన్నాయి. చిన్నప్పుడు ముస్తీరాం చూసిన వారెవరూ.

అతడి గురించి ఒక్క మంచి మాటల చెప్పురు. వీటు

భ్రమప్పుడు పొపొత్తుడు మంచి కుటుంబంలో

చెడబుట్టాడు. జన్మలో బాగువదదు - అని

ఏవగించుకుంచారు. అంతగా కంపరం కలిగించిన

ఆ నిక్షేపుడే ముముముందు గౌప్య ధర్మపీరుదపుతాడు

రారి తప్పిన వారికి మార్గం చూసిన్నాడు; చదువులను

వెలికిస్తాడు; మహా విద్యా సంస్థను నదుపుతాడు; వేద

విజ్ఞానాన్ని సూచన ధర్మాన్ని నిలబడతాడు; పవిత్రంగా

జీవిష్టుడు జాతి గ్ర్యాంపద్గ మహా వురుపుపుతాడు

- అని కలమైనా ఊహించరు.

రయసే కౌద్రిసేపు వేచి పుండమని మర్మాద చేయాలోయాడు. కుగ్రవాడు ఆగకుండా విసుద్ధన ఇంలీకి వెళ్లాడు. రాత్రి నిద్రప్పులేదు. ఎంతసేపు అదే ఆలోచన. దేవుడి దృగ్గర కూలా ఎప్పు తక్కువు ఉంటాయా? మనసులకు శేషభావం ఉండేచ్చు. దేవుడికి ఏష్టుంది?

ఎవరో మహారాజీ వచ్చిందని మురిసి

మామాలు భక్తులను దగ్గరికి రానిష్టనిాడు

ఏమి దేవుడు? అనలు దేవుడనే వాడున్నాడు?

వాడున్నాడు? మనిషి తెక్కిన విగ్రహమేనా?

ఇం అలోచిస్తు పోయి కౌద్రి విశ్వాసుడి

పీచే కాదు, అందరూ దేవుళ్ల మీంగా

ముస్తీరాంకు అనప్యాం వేసింది.

రాయారఘవులకు మహిమ ఉస్తుని ముస్తీరాంగా

నమ్మే పించు మతమంచేనే విరక్తి

పట్టింది. సరైన దారి ఎదో ఎవరు

పూసించగలా అని అలోచిస్తే

తనకు పరివితుడైన ఒక క్రిష్ణయే

మిషనరీ స్పృంచిందాడు. పుస్తకాల్లో

తాను చమిన లోహ నారికి, క్రీస్తు

కరుణ గుర్తొచ్చాయి.

కీరస్తునీ మంతం పీద

కుంపుహాలం కలిగి, తెలిసిన

ప్రాతిష్టంలీ మిషనరీ దగ్గరికి వెళ్లాడు.

అతడు బోలెదు సంతోషప్పద్దుడు.

మంచి నిర్మయం తీసుకున్నావు. నీ

కట్టు తెరయకున్నాయి. ప్రథమ నిన్న

కరుణించాడు. వెంటనే మా

మంతంకి మారు' అని

పెంచుచ్చాడు.

'అది తరవాత మార్చాం.

ముందు మీ పుండం గురించి చెప్పు'

అన్నాడు ముస్తీరాం. అతడి ప్రథ్మలకు

సంచేషించాడు. అతడి ప్రథ్మలకు

చెప్పులేక పోయాడు. అతడి ప్రథ్మలకు

కాదునుకొని, ముస్తీరాం ఓ రోమ్మన్

కాథలిక్ క్రీస్తు దగ్గరికి వెళ్లాడు.

మొదటి వాడి మీద అతడు సంయం

అనిశించాడం. [క్రైత్రవ మంతం

గొవుకునం తెలిపే

శాస్త్రాలు]

